

Half Yearly Examination – 2020

Class –IX

हिन्दी

Time : 2 hrs.

M.M. : 80

Note : You will not be allowed to write during the first fifteen minutes. This time is to be spent in reading the question paper. The time given at the head of this paper is the time allowed for writing the answers. The intended marks for questions or parts of questions are given in brackets [].

प्रश्नपत्र दो भागों में विभक्त है। खण्ड 'क' के सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। खण्ड 'ख' से दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। साहित्य सागर (गद्य) व साहित्य सागर (पद्य) से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य है।

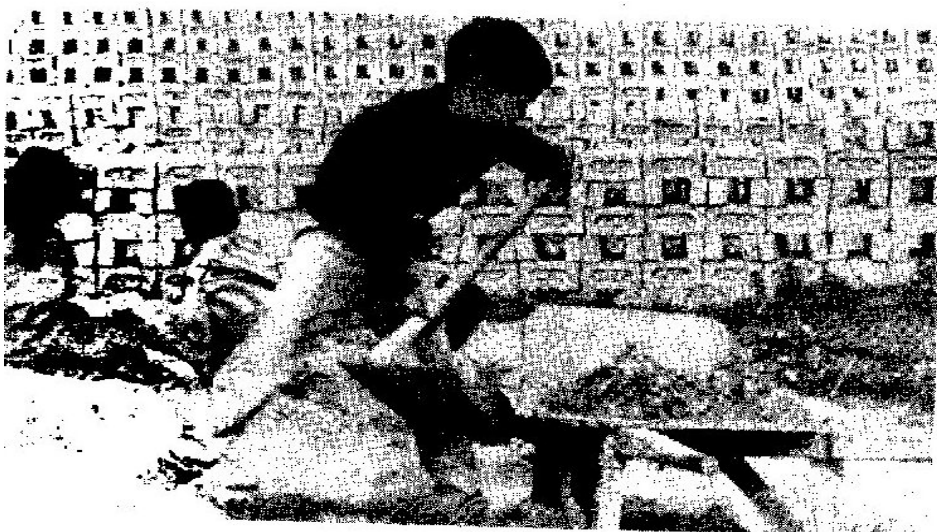
खण्ड-क

1- निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर रोचक व सारगर्भित निबन्ध लिखिए जो 250 शब्दों से कम न हो।

(15)

- (क) आपके विद्यालय में एक मेले का आयोजन किया गया था। यह किस अवसर पर, किस उद्देश्य से किया गया था? उसके लिए आपने क्या-क्या तैयारियाँ कीं? आपने और आपके मित्रों ने एवं शिक्षकों ने उसमें क्या सहयोग दिया था? इन बिंदुओं को आधार बनाकर एक विस्तारपूर्वक लेख लिखिए।
- (ख) यात्राएँ एक उत्तम रुचि हैं। यात्राएँ करने से ज्ञान तो बढ़ता ही है, स्थान विशेष की संस्कृति तथा परंपराओं का परिचय भी मिलता है। अपनी किसी यात्रा के अनुभव तथा रोमांच का वर्णन करते हुए एक निबन्ध लिखिए।

- (ग) 'वन है तो भविष्य है' आज हम उसी भविष्य को नष्ट कर रहे हैं, कैसे? कथन को स्पष्ट करते हुए जीवन में वनों के महत्त्व पर अपने विचार लिखिए।
- (घ) एक मौलिक कहानी लिखिए जिसका अंत प्रस्तुत वाक्य से किया गया हो- और मैंने राहत की साँस लेते हुए सोचा कि आज मेरा मानव जीवन सफल हो गया।
- (ङ) नीचे दिए गए चिर्ां को ध्यान से देखिए और चिर्ां को आधार बनाकर उसका परिचय देते हुए कोई लेख, घटना अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट संबंध, चिर्ां से होना चाहिए।



2- निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 120 शब्दों में पत्र लिखिए- (7)

- (क) आपकी बैंक पासबुक खो गई है। आप भारतीय स्टेट बैंक के मैनेजर को आवेदन-पत्र लिखकर पासबुक की दूसरी प्रति जारी करवाने का अनुरोध करें।

अथवा

- (ख) अपने अनुज को पत्र लिखें, जिसमें अनुशासन का महत्त्व बताया गया हो।

3- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर यथासंभव अपने शब्दों में दीजिए। (10)

एक रियासत थी। उसका नाम था कंचनगढ़। वहाँ बहुत गरीबी थी। लोग कमजोर थे और धरती में कुछ उगता न था। चारों ओर भुखमरी थी। एक दिन राजा कंचनदेव राज्य की दशा से चिंतित हो उठे। अचानक उनके पास एक साधु आए। राजा ने उन्हें प्रणाम किया। राजा ने साधु को अपने राज्य के बारे में बताया और कुछ उपाय करने की प्रार्थना की। साधु मुस्कराकर बोले- “कंचनगढ़ के नीचे सोने की खान है।” इतना कहकर साधु चले गए।

राजा ने खुदाई करवाई। वहाँ सोने की खान निकली। राजा का खजाना सोने से भर गया। राजा ने अपने राज्य में जगह-जगह मुफ्त भोजनालय बनवाए, दवाखाने खुलवाए, चारागाह बनवाए तथा अन्य सुख-सुविधा के साधन उपलब्ध करा दिए। अब यहाँ कोई दुखी नहीं था। सब लोग खुश थे। धीरे-धीरे लोग आलसी हो गए। कोई काम नहीं करता था। भोजन तक मुफ्त में मिलने लगा था। मंत्री ने राजा को बहुत समझाया और कहा- “महाराज, लोग आलसी होते जा रहे हैं। उनको काम दिया जाए।” परंतु राजा ने मंत्री की बात को टाल दिया।

कंचनगढ़ की समृद्धि को देखकर पड़ोसी रियासत के राजा को ईर्ष्या हुई। उसने अचानक कंचनगढ़ पर चढ़ाई कर दी और माँग की- “सोना दो या लड़ो।” कंचनगढ़ के आलसी लोगों ने राजा से कहा- “हमारे पास बहुत सोना है, कुछ दे दें। बेकार खून क्यों बहाया जाए?” राजा ने लोगों की बात मान ली और सोना दे दिया। कुछ दिनों बाद उसी पड़ोसी राजा ने कंचनगढ़ पर फिर चढ़ाई कर दी। इस बार उसका लालच और बढ़ गया था। इसी प्रकार उसने कई बार चढ़ाई कर-करके कंचनगढ़ से सोना ले लिया। यह सब देखकर राजा का मंत्री

बहुत परेशान हो गया। वह राजा को समझाना चाहता था, किंतु राजा के सम्मुख कुछ बोलने की हिम्मत नहीं हो पा रही थी। अंत में उसने युक्ति से काम लिया।

एक दिन मंत्री कंचनदेव को घुमाने के लिए नगर के पूर्व की ओर बने गुलाब के बाग की ओर ले गया। राजा कंचनदेव ने देखा कि बाग में दाने बिखरे पड़े हैं। कबूतर दाना चुग रहे हैं। थोड़ी दूर कुछ कबूतर मरे पड़े हैं। कुछ भी समझ में न आने पर राजा ने मरे हुए कबूतरों के बारे में मंजी से पूछा।

मंजी ने बताया- “महाराज, इन्हें शिकारी पक्षियों ने मारा है।” राजा ने पूछा- “तो कबूतर भागते क्यों नहीं?” “भागते हैं लेकिन लालच में फिर से आ जाते हैं, क्योंकि उनके लिए यहाँ, आपकी आज्ञा से दाना डाला जाता है।” -मंत्री ने बताया। राजा ने कहा- “दाना डलवाना बंद कर दो।” मंत्री ने वैसा ही किया।

राजा अगले दिन फिर घूमने निकले। उन्होंने देखा कि दाना तो नहीं है, किंतु कबूतर आ जा रहे हैं। राजा ने मंजी से इसका कारण पूछा। मंजी ने बताया- “महाराज, इन्हें बिना प्रयास के ही दाना मिल रहा था। यह अब दाने-चारे की तलाश की आदत भूल चुके हैं, आलसी हो गए हैं। शिकारी पक्षी इस बात को जानते हैं कि कबूतर तो यहीं आएँगे अतः वे इन्हें आसानी से मार डालते हैं।” राजा चिंता में पड़ गए। उन्होंने शाम को मंजी को बुलाकर कहा- “नगर के सारे मुफ्त भोजनालय बंद करवा दो। जो मेहनत करे, वही खाए। लोग निकम्मे और आलसी होते जा रहे हैं। और हाँ, एक बात और! मैं अब शत्रु को सोना नहीं दूँगा, बल्कि उससे लड़ाई करूँगा। जाओ, सेना को मजबूत करो।” मंजी राजा की बात सुनकर बहुत खुश हो गया।

- (क) राजा कंचनदेव की चिंता का क्या कारण था ? उन्होंने साधु से क्या प्रार्थना की ?
- (ख) साधु ने राजा को क्या बताया ? उसके बाद राजा ने राज्य के लिए क्या-क्या कार्य किए ?
- (ग) पड़ोसी राजा के आक्रमण करने पर कंचनगढ़ का राजा क्या करता था और क्यों ?
- (घ) कबूतरों की दशा कैसी थी ? उस दशा को देखकर राजा ने क्या सीखा ?
- (ङ) राजा ने मंजी को क्या आदेश दिए ? आदेश सुनकर मंत्री की क्या स्थिति हुई ?

4- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए-

- (क) निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए- (1)

सफेद, हिंसक

- (ख) नीचे लिखे शब्दों के विशेषण रूप लिखिए- (1)

प्रमाण, सुगंध

- (ग) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द का दो पर्यायवाची लिखिए- (1)

सरस्वती, शत्रु

- (घ) निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए- (1)

उद्भव, उग्र, उष्ण

- (ङ) नीचे लिखे मुहावरों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए- (1)

बहती गंगा में हाथ धोना

दो टूक जवाब देना

(च) कोष्ठक में दिए गए निर्देश के अनुसार वाक्यों में परिवर्तन कीजिए- (3)

(अ) अनेक जानवर चारागाह में चर रहे हैं।

(भूतकाल में बदलिए।)

(ब) शिखा ने सितार बजाया।

(द्वारा का प्रयोग करके लिखिए।)

(स) राधा नम्रता से बोलती है।

(रेखांकित शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग कीजिए)

खण्ड- ख

साहित्य सागर (गद्य)

5- निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (20)

‘दोनों घंटों साथ बैठते, बातें करते’।

(क) ‘दोनों’- शब्द से किस-किस की ओर संकेत है ?

(ख) वे दोनों किस-किसके यहाँ काम करते थे ?

(ग) वे दोनों जिन लोगों के यहाँ काम करते थे, दोनों में कौन-सी बात समान थी ?

(घ) किस घटना से स्पष्ट होता है कि दोनों में बहुत मैत्री थी ?

6- मतलब यह कि बात लाख रुपये की सुझाई गई है, परंतु कठिनाता यह थी कि मोटी रस्सी कैसे मँगाई जाए ? (20)

(क) किसने, किसे, क्या सुझाव दिया था ?

(ख) ‘कठिनाता’ शब्द का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है ?

(ग) उस कठिनाई का हल किसने तथा कैसे निकाला ?

(घ) जवाहर भैया से क्या मदद ली गई तथा क्यों ?

साहित्य सागर (पद्य)

- 7- निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (20)

‘गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पायँ।

बलिहारी गुरु आपनो जिन गोविंद दियौ बताय।’

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहि।

प्रेम गली अति साँकरी, तामे दो न समाहि॥

- (क) कवि किसके बारे में क्या सोच रहे हैं ?
- (ख) कवि किसके ऊपर न्योछावर (समर्पण) हो जाना चाहते हैं तथा क्यों ?
- (ग) ईश्वर का वास कहाँ नहीं होता है ? कवि हमें क्या त्यागने की प्रेरणा दे रहे हैं ? कवि का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताइए।
- (घ) ‘साँकरी’ शब्द का क्या अर्थ है ? प्रेम गली से कवि का नया तात्पर्य है ? उसमें कौन दो एक साथ नहीं रह सकते हैं ?

- 8- राजा के दरबार में जैसे समया पाय। (20)

साँई तहाँ न बैठिये, जहँ कोउ देय उठाय॥

जहँ कोउ देय उठाय, बोल अनबोले रहिए।

हँसिये नहीं हहाय, बात पूछे ते कहिए॥

कह ‘गिरिधर कविराय’, समय सो कीजै काजा।

अति आतुर नहिं होय, बहुरि अनखैहैं राजा॥

- (क) ‘हमें किस स्थान पर नहीं बैठना चाहिए’ स्पष्ट कीजिए।
- (ख) ‘हँसिये नहीं हहाय’ का क्या अर्थ है ?
- (ग) उपर्युक्त कुंडलियों में गिरिधर कविराय ने क्या प्रेरणा दी है ?
- (घ) शब्दार्थ लिखिए- तहाँ, कोउ, जहँ, अनखैहैं आतुर।